



## सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा 'व्यवस्थापक सुधारक' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिए। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छपा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

—व्यवस्थापक

वर्ष : 66  
सितम्बर 2018  
दयानन्दाब्द 195  
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,118

अंक : 1  
विक्रमाब्द 2075  
कलिसंवत् 5118

### विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनयः	1
2.	राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा	2
3.	आर्यज्योति के पुनरुद्धारक.....	4
4.	श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती	7
5.	दूसरी आर्यवेदप्रचार यात्रा....	13
6.	गोमाता का वध बन्द हो!	14
7.	कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार को गुरुकुल.	16
8.	एक और प्रमाण	18
9.	कागज के फूल	19
10.	कलियुग कालिमा	20
11.	हिन्दी मोहन मेरा	21
12.	गुरुकुल के समाचार	23



नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

—व्यवस्थापक सुधारक

## वैदिक विनय

### 5. आषाढ

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन्, तृतीये लोके अन्गाः स्याम । ।

ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः, सर्वान् पथो अनृणा आक्षियेम । ।

अथर्व 6.117.3।।

**विनयः-** मनुष्य तो जन्म से ही कुछ ऊँचे ऋणों से। बँधा हुआ है। मनुष्य उत्पन्न होते ही ऋणी है और उन वास्तविक ऋणों से मुक्त होना ही मनुष्यजीवन की इति कर्तव्यता है। मनुष्य ने संसार के तीनों लोकों को भोगने के लिये जो तीन शरीर पाये हैं, उसी से वह तीन प्रकार से ऋणी है। हे प्रभो ! हम चाहे पितृयाण मार्ग के यात्री हो या देवयान के, हम इन तीनों लोकों की अनृणता करते हुवे ही रहें। हम अपनी सब शक्ति और सब यत्न इन ऋणों को उतारने में ही व्यय करते हुवे जीवन बितावे। इस स्थूल भूलोक का ऋण अन्यो को भौतिक सुख देने से, तथा समाज को कोई अपने से श्रेष्ठतर भौतिक संतान दे जाने से उतरता है। इसी तरह मनुष्यों को जगत् की प्राकृतिक अग्नि आदि शक्तियों से तथा साथी मनुष्यों की निस्वार्थ सेवाओं से जो सुख निरन्तर मिल रहा है उसके ऋण को उतारने के लिये इन यज्ञक्रों को जारी रखने के निमित्त उसे यज्ञकर्म करना भी आवश्यक है। और तीसरे ज्ञान के लोक से मनुष्य को जो ज्ञान का परम लाभ हो रहा है उसकी संतति भी जारी रखने के लिये स्वयं विद्या का स्वाध्याय और प्रवचन करके उससे उसे उऋण होना चाहिये। जो त्यागी लोग सांसारिक- भोग की कामना नहीं करते अतएव जिन्हें यह तीन ऋण इस तरह नहीं बाँधते, उन ब्रह्मचर्य, तप, श्रद्धा के मार्ग से चलने वाले देवयान के यात्रियों को भी अपने तीनों शरीरों के उपयोग लेने का ऋण चुकता करना चाहिए अर्थात् अपने भौतिक शरीर से वे बेशक सन्तान उत्पन्न करना आदि न करेंगे पर उस द्वारा सेवा के अन्य स्थूल कर्म उन्हें करने ही चाहिये और अपने प्राण व मन से दूसरे से प्रेम और दया आदि की धारयें बहानी चाहिये तथा लोक सम्बन्धी तीसरे विज्ञानमय शरीर द्वारा ज्ञान सूर्य बनकर ज्ञान की किरणें प्रसारित करते हुवे तीसरे लोक में भी अनृण होना चाहिये।

ओह ! मनुष्य तो सर्वदा ऋणों से लदा हुआ है। जो जीव इस विविध शरीर को पाकर भी अपने को ऋणबद्ध नहीं अनुभव करता वह कितना अज्ञानी हैं ! हमें तो, हे स्वामी ! ऐसी बुद्धि और शक्ति दो कि हम चाहे देवयानी हों या पितृयानी, हम सब लोकों में रहते हुवे, सब मार्गों पर चलते हुवे, लगातार अनृण होते जायें। अगले लोक में पहुंचने से पहले पूर्वलोक के ऋण हम अवश्य पूरा कर दवे और अगले मार्ग पर जाते हुवे पिछले मार्ग के ऋण उतार चुके हों। इस तरह लगातार घोर यत्न करते हुवे हमें सदा, सब लोकों में अनृण करो। हे प्रभो हमें अनृण रखो, हमें अनृण करो।

शब्दार्थ । (अस्मिन् अनृणाः) इस लोक में हम अनृण होवें, ( परस्मिन् अनृणाः ) परले लोक में अनृण हों और ( तृतीये लोके अनृणाः स्याम ) तीसरे लोके में भी अनृण होवें। (ये देवयानाः पितृ-याणाश्च लोकाः ) जो देवयान या पितृयाण मार्गों के लोक हैं उनमें (सर्वान् पथः ) सब मार्ग चलते हुवे हम ( अनृणाः आ क्षियेम) ऋणमुक्त होकर रहे, बसें ।।

## सम्पादकीय राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा

स्वतन्त्र भारत के संविधान में देवनागरी = लिपि में लिखी हुई हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा स्वीकृत किया हुआ है। इस भाषा का व्यवहार न करना राष्ट्र = का ही अपमान माना जायेगा। भारत का सर्वोच्च = न्यायालय भी आज तक हिन्दी की उपेक्षा करता। आ रहा है। पंजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय की भांति सर्वोच्च न्यायालय को भी अपने निर्णय हिन्दी में देने की व्यवस्था बना लेनी चाहिये। सर्वोच्च न्यायालय के लिए विशेष प्रशंसा की बात तो तब हो जब वह इंग्लिश भाषा का सर्वथा परित्याग करके पूर्ण रूप से हिन्दी को ही अपनाये।

भारत की अधिकतर जनसंख्या हिन्दी बोलने, समझने और लिखने वालों की है। इस संख्या की बहुलता को देखते हुए भी हिन्दी भाषा को प्रमुखता देनी चाहिये। परन्तु भारत देश का यह दुर्भाग्य है कि यहां के वकील और न्यायाधीश भी अंग्रेजों द्वारा पराधीन भारत में प्रयुक्त अंग्रेजी भाषा, वेशभूषा आदि को ज्यों का त्यों अपनाये हुए हैं। इस स्थिति को देखकर प्रतीत होता है कि इन लोगों में मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा के प्रति आदर की भावना नहीं है। परन्तु उच्चारण और व्याकरण की दृष्टि से सर्वथा अनुपयुक्त अंग्रेजी भाषा में व्यवहार करने में गौरव का अनुभव करते हैं।

क्या भारत के अतिरिक्त संसार में अन्य कोई ऐसा देश है, जिस पर अंग्रेजों ने शासन करते हुए घोर अत्याचार किये हों, बलात् अपनी भाषा और संस्कृति लादी हो और उनके देश छोड़ जाने पर भी उसी पराधीनता की प्रतीक भाषा, वेशभूषा और संस्कृति से चिपटे बैठे हों। विश्वभर में यह भारत ही ऐसा स्वाभिमान शून्य देश है, जिसे गुलामी काल इतना पसन्द है कि उस समय की किसी भी चीज को छोड़ना नहीं चाहता। जब शिक्षित समुदाय की यह अवस्था है तो सामान्य जन भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। देहात के अल्पशिक्षित व्यक्ति जिन्हें शुद्ध हिन्दी भी नहीं आती वे भी विवाह और नामकरण आदि संस्कारों के सूचना पत्र अंग्रेजी में छपवाकर स्वयं को गौरवान्वित समझते हैं।

सन् 1835 में लार्ड मैकाले द्वारा चली गई। चाल कितनी गहराई तक भारतवासियों के हृदय में घर किये हुए है। जिस भाषा के उच्चारण तदनुरूप न होकर सर्वथा विपरीत होता हो, जिसके अक्षरों की भी सदा एकरूपता न हो, बड़े अक्षर अलग ढंग के, छोटे अक्षर दूसरे ही प्रकार के तथा हाथ की लिखाई तीसरे प्रकार की हो, वह भाषा हिन्दी भाषा पर साम्राज्य कर रही हो यह विडम्बना ही कही जायेगी।

एक अबोध बालक के ऊपर एक ही अक्षर के तीन विभिन्न प्रकार के रूपों का बोझा डालना, हैं उन्हें एक ही अक्षर मानकर उनकी पहचान करने के लिए विवश करना, यह कहां की वैज्ञानिकता ने और समझदारी है? इसके विपरीत देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी भाषा की यह विशेषता है कि इसमें जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा भी जाता है और जैसा लिखा हुआ है, उसे उसी रूप में बोला भी जाता है। हिन्दी में किसी लिखे अक्षर को न बोलना (साइलेंट करना) या एक ही आकृति के भिन्न-भिन्न उच्चारण करने जैसा दोष नहीं है, इसीलिये यह लिपि और भाषा संसार में सर्वश्रेष्ठ और वैज्ञानिक है। इतना होने पर भी तथाकथित शिक्षित और सभ्य व्यक्ति भी अंग्रेजी के व्यामोह में फंसा हुआ है, यह राष्ट्रभाषा का साक्षात् अपमान है, इसे राष्ट्रद्रोह के समान समझना चाहिये। भारत सरकार प्रतिवर्ष सितम्बर में हिन्दी पखवाड़ा मनाकर अपने कर्तव्य की इति श्री समझ लेती हैं, परन्तु इसे क्रियान्वित करने का कोई ठोस कदम नहीं उठाती। चीन, जापान, रूस, फ्रांस

और मुस्लिम देशों से भारत सरकार को शिक्षा लेनी चाहिये कि वे अपनी भाषा और लिपि का कितना सम्मान करते हैं, उनका उचित अनुकरण हमारे देश में लेशमात्र भी नहीं हो रहा है, यह लज्जा का विषय हैं।

हमारे नेता और देश के करणधार लोग यह क्यों नहीं सोच पाते कि जिन लोगों ने पराधीन भारत में लाखों निरपराध लोगों की हत्या की हों, ग्रामों और खेतों को जलाकर भस्मसात कर दिया। हो, भारत की मूल्यवान् सम्पदा लुटकर अपने देश को धनवान् बना लिया हो, उनकी सर्वथा अवैज्ञानिक भाषा से आज तक क्यों चिपटे बैठे हैं ? भारत की शिक्षानोति भी इसमें प्रमुख कारण है। यह भ्रम। फैलाया जा रहा है कि अंग्रेजी के बिना काम नहीं। चलती। उन्हें यह भी सोचना चाहिये कि संसार में। ऐसा कौन सा देश है जो अपनी भाषा को छोड़कर। हिन्दी को ही प्रमुखता देता हो। भारत के अतिरिक्त विश्व में ऐसा और कोई देश ऐसा नहीं होगा जो। स्वभाधा और लिपि को महत्व नहीं देता हो।

अतः इस हिन्दी पखवाड़े को यदि वस्तुतः। क्रियात्मक रूप देना हो तो अंग्रेजी का सर्वथा बहिष्कार। करना होगा अन्यथा भारत की वर्तमान और भावी सन्तति स्वयं को भारतीयता से सम्बद्ध नहीं कर सकेगी।

दक्षिण भारत के चार प्रान्त, पंजाब, कश्मीर, आसाम, बंगाल आदि प्रदेश हिन्दी भाषा की उतना महत्व नहीं देते, जितना कि देना चाहिये।

यह कार्य भी एक प्रकार से राष्ट्रभाषा के प्रति विद्रोह ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की मातृभाषा गुजराती तथा व्यावहारिक भाषा संस्कृत थी, पुनरपि देश के भविष्य में हिन्दी का प्राधान्य रहेगा, इसी विचार से उन्होंने हिन्दी भाषा सीखी और अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी भाषा में रचे। सन् 1875 के बाद उनको हिन्दी भाषा इतना शुद्ध और प्राञ्जल बन गई थी कि उसकी बराबरी करने वाला लेखक दुर्लभ था। यदि उस युगद्रष्टा ऋषिवर की बात मान ली जाती तो आज भारत में भाषा की समस्या का पूर्णतः समाधान हो गया होता। जब सारे भारतवासी एक ही भाषा का व्यवहार करेंगे तो अत्यन्त आनन्द होगा। इस एकरूपता का नियम केन्द्र सरकार कठोरता से लागू करे तो हिन्दी भाषा का कल्याण सम्भव है।

आजकल भारत के निवासी विशेषकर नागरिक लोग ( अब देहाती लोग भी अपनी सन्तान को बचपन से ही अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा दिलाने में गौरव अनुभव करते हैं। इसी का परिणाम है कि वे हिन्दी के प्रति उपेक्षा का व्यवहार करते हैं। अल्पपठित लोग भी अपनी दुकानों के नामपट्ट अंग्रेजी में ही लिखाते हैं, उन्हें शुद्धाशुद्धि से भी कोई मतलब नहीं, केवल अक्षर रोमन के होने चाहिये। ऐसे नामपट्ट 7 और विज्ञापनों को देखकर प्रतीत होता है कि हम युरोप और अमेरिका में भ्रमण कर रहे हों। अतः बालकों के अभिभावकों और देश के नेताओं का र यह कर्तव्य है कि भारत की वर्तमान और भावी पीढ़ी को राष्ट्रभाषा के प्रति सम्मान करना सिखायें।

अन्यथा विदेशी राजननियक लोग हमारे राजनेताओं से यही प्रश्न करते रहेंगे कि क्या आपके देश की कोई भाषा नहीं है? वह सुनकर लज्जित ही होना पड़ेगा।

**विरजानन्द देवकरणि**

## आर्षज्योति के पुनरुद्धारक ब्रह्मऋषि गुरु विरजानन्द जी दण्डी को शत-शत नमन

डॉ. राम प्रकाश

दो प्रज्ञाचक्षु विभूतियाँ इस देश में अमर रहेंगी। एक कृष्णभक्त ब्रजवासी सूरदास जिसने में सूरसागर की रचना करके भक्ति की लहर चलाई, दूसरा प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द जिसका झुकाव आर्षग्रन्थों की ओर हुआ और जिसने ज्ञान = की गंगा बहाकर समस्त धार्मिक जगत् एवं विद्वत्- समाज को आन्दोलित किया। इतिहास में यह एक = विस्मयोत्पादक घटना है कि एक व्यक्ति नेत्रहीन है, उसने जीवन में किसी पुस्तक के दर्शन नहीं किए, कोई पुस्तक स्वयं खोलकर पढ़ी नहीं, फिर भी वह = संस्कृत व्याकरण तथा अनेक क्लिष्ट विषयों का अद्वितीय पण्डित हैं। नेत्रहीनता ने उसके शास्त्रज्ञान प्राप्ति में बाधक हुई, न अध्यापन में। जो नेत्रहीन भले ही थे परन्तु ज्योतिष्मान् थे, उस आलोक-पुरुष को नमन।

जिस दुबले-पतले व्यक्ति के भीतर इस्पात का कुछ था चट्टान जैसा, जिसने हर विपदा को सुअवसर में परिवर्तित किया, प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी जिसका मार्ग अवरुद्ध न कर सकी, उस अदम्य उत्साह की मूर्ति को नमन।

जिसका मस्तिष्क अद्भुत पुस्तकालय था, जिस की जिह्वा पर सरस्वती नृत्य करती थी, जिसके वैदुष्य के सामने कोई पण्डित ठहर न सका, जो श्रुतिधर था, जो प्रतिभाशाली कवि था, जो विद्यावारिधि था, जो प्रबल तार्किक एवं प्रतिवादी अकाट्य शास्त्रार्थी था, जो शास्त्र समर का अजेय योद्धा था, उस शास्त्रतरत्र-मर्मज्ञ प्रज्ञापुरुष को नमन।।

जिसने अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन कर ब्रह्मा में विचरण किया, जिसने पुत्रैषणा, वितैषणा एवं लोकैपणी पर पूर्ण विजय प्राप्त की, जिसका सभी हिन्द, मुस्लिम, साधु, सन्त, फकीर आदर करते थे, जो सुख-दुःख, हानि-लाभ से ऊपर था, जो स्थितप्रज्ञ था, उस सत्य के पुजारी, अपनी प्रकृति के राजेश, धुन के धनी, विरक्त, योगी, निर्भीक, निःस्पृह संन्यासी को नमन।

जिस आचार्य ने सहस्रों वर्षों के पश्चात् वेद को स्वतः प्रमाण घोषित किया, जिसने प्रत्येक शास्त्र को वेद की कसौटी पर परखना चाहा, जिसने व्याकरण का प्रयोग वेदादि के लिए स्वीकार किया, जो व्याकरण पढ़ाते समय वेदादि से उदाहरण देने के कारण शंकर, रामानुज, वाल्लभ तथा मध्य आदि मध्य युगीन आचार्यों से कहीं आगे था, जिसने आगे बढ़ने के लिए वेद की ओर पीछे मुड़ने का निर्देश किया, जो नाविक चप्पू चलाते समय देखता पीछे था और नाव को बढ़ाता आगे था, जिस आचार्य प्रवर ने पहली बार सायण भाष्य को अनार्ष कहा, जिसने विदेशी शासन में भी मन्त्रोच्चारण शुद्ध ने करने वाले विदेशियों को वेदाध्ययन का अनधिकारी बताया, जिसने वेदार्थ समझने की सही कुंजी प्रदान की, उस साहसी महान् मनीषी वेदभक्त को नमन।

जन भट्टोजि दीक्षित के प्रयत्नस्वरूप सिद्धान्तकौमुदी के अतिरिक्त अन्य व्याकरण-ग्रन्थों, का अध्ययन-अध्यापन समाप्त हो गया था, जब अष्टाध्यायी का पठन-पाठन बन्द हो चुका था, जब अष्टाध्यायी के मर्म से शून्य पण्डित कहते थे किन अष्टाध्यायी पढ़ने से व्याकरण आता है और न महाभाष्य की गणना व्याकरण-ग्रन्थों में होती है, जब कहीं-कहीं आधी-अधूरी अष्टाध्यायी का पुनः प्रचलन किया, जिस परिव्राट् ने वह महान् कार्य किया जो बड़े-बड़े सम्राट् न करवा सके, जिसके

पाण्डित्य के कारण संस्कृत व्याकरण का कालक्रम 'दण्डी पूर्व' और 'दण्डी बाद के रूप में लिखा जा सकता है, अष्टाध्यायी का पुनरुद्धार करने वाले उस व्याकरण-सूर्य को, शब्दशास्त्र के ऋषि को साक्षात्कृतधर्मा को नमन।

जिसने ऋषिप्रणीत ग्रन्थों पर बिना किसी नूतन तत्त्व के व्यर्थ टीका लिखकर मूल ग्रन्थ का क्रम भंग करने वाले ब्रह्महत्यारे सामान्य मनुष्यों को यह अनर्थ बन्द करने की चेतावनी दी, जिसने भोगवादी संस्कृति के पुजारी लेखकों की पुस्तकों की भरमार में से तत्त्वदर्शी ऋषियों के आर्षग्रन्थों को पहचानने की कसौटी प्रदान की, जिसने अनार्ष चिन्तन के घनघोर काले बादलों में छिपे आर्ष-ज्ञान के सूर्य के पुनः दर्शन करवाए, जिसके जीवन के अन्तिम दो दशकों में जीवन वृत्त की परिधि का केन्द्र बिन्दु आर्षग्रन्थ रहे, भारतीय अस्मिता तथा पहचान को बनाए रखने की दिशा में क्रान्तिकारी पग उठाने वाले उस अमर योद्धा को नमन।। जब धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से पूर्णतया विघटित भारतवर्ष में अनेक छोटी-छोटी रियासतें थीं, जब उन पर अंग्रेजी शासन का शिकंजा दिन-प्रतिदिन कसता जा रहा था, जब अज्ञान, अशान्ति, दरिद्रता, भुखमरी, अकाल तथा अराजकता को पूर्ण साम्राज्य था, जब परस्पर घोर विरोधी मतमतान्तरों का जाल बिछा हुआ था, जिनके अनेक देवी-देवता थे जिनके भिन्न-भिन्न मन्दिर थे, जिनमें व प्रकल्पित भिन्न भिन्न शास्त्रों के आधार पर पूजापाठ की भिन्न-भिन्न पदतियाँ प्रचलित थी, जब न चिन्तन समान था, न विचार न आचार समान था, न व्यवहार; न आराध्य दैव एक था, न पूजा-पाठ को विधि न आचार्य एक था, न धर्मग्रन्थ, व विभिन्न पुराणों की रचना की जाचुकी थी, जब विभिन्न आचार्यों की सम्पूर्ण शक्ति अपने-अपने सम्प्रदाय की श्रेष्ठता सिद्ध करने में लग रही थी, तब विदेशी शासन के विरुद्ध राजाओं एवं प्रजा में चेतना पैदा करने वाले, सम्प्रदायवाद के विरुद्ध सतत संघर्ष कर एकता का बीज-वपन करने वाले, पुराणों, मतमतान्तरों एवं सम्प्रदायों के विरु ध्वनित उस स्वर को नमन ।।

जब चेतन जीवात्मा जड़ प्रकृति के सामने माथा टेककर अपनी और परमात्मा दोनों का अपमान कर रही थी, जब एक निराकार परमात्मा की स्तुतिप्रार्थनोपासना के बदले नित्य नए स्वनिर्मित भगवानों की मूर्तियों का पूजन जारों पर था, जब मूर्तिपूजा और अवतारवाद ने जगन्नियंता प्रभु को ही उसके स्थान से अपदस्थ कर दिया था, जब लगभग सभी आचार्यों एवं सम्प्रदायों के प्रवर्तकों तथा उनके अनुयायियों ने मूर्तिपूजा के साथ दुरभिसन्धि करने में ही भलाई मान ली थी, जो आचार्य स्वयं अवतारवाद के पोषक न थे उनके शिष्य उन्हें ही अवतार एवं साक्षात् भगवान् मानने लग गये थे, ऐसे समय में मूर्तिपूजक परिवार में जन्मे, उन्हीं संस्कारों में पले, मूर्तिपूजा के प्रसिद्धतम गढ़ों में शिक्षा-प्राप्त तथा उन्हीं के बीच में रहने वाले जिस प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी ने मूर्तिपूजा और अवतारवाद को वेदविरुद्ध बौधित कर इस चिन्तन को दृढ़ शास्त्रीय आधार प्रदान किया, जिस आचार्य ने स्वयं तो क्या जिसके शिष्य ने भी मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद से दि समझौता न किया, जिसने मूर्तिपूजा के स्थान पर प्र गायत्री, प्राणायाम तथा योगाभ्यास पर आधारित कि ईश्वरोपासना पर बल दिया, उस सच्चे ईश्वरोपासक के को नमन।

जब भारतीय समाज सभी आयोजित गुणों भू से वंचित हो चुका था जब चाटुकारिता, दम्भ, त भयग्रस्त जीवन तथा पेटपूजा के लिए सत्य का क्रय-विक्रय सामान्य बात बन गई थी, जब हीनवृत्ति के कारण ईश्वर-पुत्र कर्म भ्रष्ट ही नहीं, नाम भ्रष्ट भी हो गए थे, जब अन्धविश्वासों, रूढ़ियों एवं अवैदिक में मान्यताओं में फंसे समाज का धर्म मृतक-श्राद्ध एवं से कण्ठी, माला, तिलक, छाप आदि बाहरी प्रतीकों से तक ही सीमित हो गया था, तब उन कुरीतियों के ८ विरुद्ध संघर्षरत उस समाज सुधारक को, उस में महामानव को, उस पथप्रदर्शक को नमन।

जब बाल-विवाह एवं वृद्ध विवाह के कारण । भारत में बाल-विधवाओं की बहुसंख्या थी, जब = मृत-पति के साथ सती होने के अतिरिक्त इन विधवाओं के पास कोई विकल्प न था, जब बाल- विधवाओं के कारण क्रन्दन का भी पाषाण हृदयों पर प्रभाव नहीं पड़ रहा था, तब जिसने धार्मिक जगत् में साहसपूर्ण घोषणा की थी कि विधवा- विवाह वेद वर्जित नहीं है, उस पराई-पीड़ा को अनुभव करने वाली करुणामय मूर्ति को नमन।

जिस आदर्श अध्यापक की भावना, = तत्परता, विद्वत्ता तथा अध्यापन-शैली की श्रेष्ठता को सभी स्वीकार करते थे, वैचारिक मतभेद रखने वाले भी जिसे गुरु धारण कर गौरवान्वित होते थे, सूर्य और चन्द्रमा रूपी दीपक लेकर भी आकाश जिस सदृश गुरु को पृथ्वीतल पर न खोज पाया, जिसने दयानन्द रूपी स्वर्ण को तपाकर कुन्दन बना दिया, जिसने दयानन्द को आर्षमेधा तथा वेदनिष्ठा प्रदान कर उसमें ऋषित्व का विकास सम्भव किया, जिसके चिन्तन के अमृतकणों को दयानन्द ने कालान्तर में गंगधारा का वेग प्रदान किया, जिसने प्रभु से यही वर चाहा कि मनुष्य जाति भले ही उसे भूल जाए पर उसकी कलाकृति (दयानन्द सरस्वती तथा आर्षग्रन्थों की पहचान) को सदैव स्मरण रखे, उस गुरु को, सद्गुरु को, जगद्गुरु को नमन।

समय आने पर जिस दयानन्द के समक्ष सभी पण्डित, आचार्य, वैयाकरण, योगी, यति, पादरी, मौलवी, मठाधीश तथा आस्तिक, नास्तिक एवं संशयवादी चिन्तक निस्तेज और निष्प्रभ सिद्ध हुए, उसकी प्रतिभा जिस प्रतिभा के सामने हतप्रभ हुई थी, उसके पाण्डित्य ने जिसके पाण्डित्य का लोहा माना था, उसकी विचारशक्ति ने जिसकी विचारशक्ति का अनुसरण किया था, कैसा अद्भुत होगा ऐसी प्रतिभा, पाण्डित्य व विचारशक्ति का स्वामी वह दण्डी साधु ! इस अद्भुत प्रतिभा को नमन। जैसे गुरु-शिष्य श्रृंखला में यूनान ने सुकरात, प्लेटों और अरस्तू पैदा किए, उसी प्रकार भारत में विरजानन्द दण्डी, दयानन्द सरस्वती और गुरुदत्त विद्यार्थी हुए। तीनों का ध्येय एक था, लक्ष्य एक था। इस त्रिमूर्ति के प्रथम-पुरुष को, क्रान्ति के अग्रदूत को, स्वप्नद्रष्टा दण्डी स्वामी को नमन।।

जिसके पुण्य प्रताप से उनकी उन्नीसवीं शताब्दी की यह चिन्तन परम्परा अगली शताब्दियों को सौंपने, कृष्ण जन्मभूमि से उदित होते दयानन्द रवि के दर्शन करने एवं यह अमर जीवन-गाथा लिखने का सौभाग्य भाषा, इतिहास, व्याकरण, साहित्य एवं शास्त्रज्ञान शून्य मुझ जैसे व्यक्ति को प्राप्त हुआ, उसको पुण्य स्मृति को सादर नमन । । शत-शत नमन।



27 अगस्त पुण्यतिथि पर विशेष...

## श्री जगदेवसिंह सिद्धांती

आनंददेव शास्त्री

श्री जगदेवसिंह सिद्धांती का जन्म उस समय के रोहतक जिले के झज्जर तहसील के बरहाणा (गूगनाण) ग्राम में विजयदशमी के दिन सम्वत् 1957 तदनुसार सन् 1900 ई० में हुआ। आपके पिता जी का नाम श्री प्रीतसिंह तथा आपकी माता जी का नाम श्रीमती भासकौर था।

आपके पिता श्री प्रीतसिंह जी जवानी में, प. बंगाल कैवेलरी (रिसाला) में घुड़सवार सेना में भर्ती हो गये थे। उनहोंने सेना में उर्दू तथा अंग्रेजी का सामान्य ज्ञान प्राप्त किया तथा तीव्र बुद्धि होने के कारण सिग्नल कोर में छॉट लिये गये। रुग्ण होने के कारण सेना में पेंशन लेकर सन् 1889 में घर लौट आए। आपने घर आकर आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया तथा अच्छे वैद्य बन गये। आपने "नाड़ी विचार" नामक पुस्तक भी लिखी।

बालक जगदेव की आरम्भिक शिक्षा गाँव के स्कूल में हुई। उन दिनों बरहाणा में कोई स्कूल न था। आपके पिताजी ने गाँव वालों के विरोध के बावजूद गाँव में कच्ची चौपाल में प्राथमिक स्कूल खुलवाया था। अपने मिडिल के वजीफ की परीक्षा झज्जर से उत्तीर्ण की तथा 2 रुपये वजीफा मिलने लगा। स्मरण रहे उस समय दो रुपये की बड़ी कीमत थी। आपने मिडिल परीक्षा बेरी के स्कूल से प्राप्त की। मैट्रिक परीक्षा आपने जाट हाई स्कूल रोहतक से उत्तीर्ण की। उस समय जाट स्कूल का वातावरण गुरुकुलों जैसा ही था। स्कूल में प्रतिदिन सध्या-हवन होता था।

आर्यसमाज में दीक्षा- उन दिनों आर्यसमाज का प्रचार बड़े जोर-शोर से चल रहा उत्सवों में पौराणिकों से शास्त्रार्थ भी होते थे। आप भी छारा तथा डीघल गाँवों के उत्सवों पर पिताजी के साथ जाते थे। बाद में एक दिन बरहाणा में भी आर्यसमाज का प्रचार हुआ तथा बालक जगदेव को यज्ञोपवीत प्रदान किया गया। श्री प्रीतसिंह ने तभी गाँव में आर्यसमाज स्थापित कराया। श्री प्रीतसिंह प्रधान तथा श्री फूलसिंह मन्त्री चुने गये।

विवाह- सन् 1916 ई० में जब आप 16 हाईस्कूल में पढ़ रहे थे, आपकी माता जी का देहान्त हो गया। अतः 16 वर्ष की आयु में जगदेवसिंह का विवाह बिरहोड़ गाँव की लड़की नानवी देवी के = साध कर दिया गया। सेना में भर्ती- हाईस्कूल की शिक्षा के उपरान्त श्री जगदेवसिंह के मन में सेना में जाने की इच्छा हुई, अतः आप छोड़ी गाँव के हवलदार \* चन्दगीराम के साथ जाकर पेशावर ( अब - पाकिस्तान) में 35 सिक्ख रेजिमेन्ट के अन्तर्गत जाट कम्पनी में भर्ती हो गये। उन दिनों सरकार आर्यसमाजियों से बड़ी चौकती थी, अतः आपसे सम्बन्धित पूछताछ में डीघल निवासी जेलदार मनसाराम को यह पता होते हुए कि जगदेव आर्यसमाजी है फिर भी कह दिया कि यह आर्यसमाजी नहीं है।

सेना में शिक्षा-कार्य-उस समय सैनिक का वेतन 11 रुपये होता था। 50 रुपये भर्ती पर इनाम भी दिया जाता था। श्री जगदेवसिंह सिपाहियों को अंग्रेजी सिखाने लगे, अतः सी.ओ. ने प्रसन्न होकर आपको 3 रुपये भत्ता देना प्रारम्भ कर दिया। फिर आप सैनिकों के घर पत्र भी लिखने लगे, अतः आपका भत्ता 7 रुपये कर दिया गया। सैनिकों को अंग्रेजी पढ़ाने के कारण आपका भत्ता 30 रुपये कर दिया गया। | अद्भुत स्मृति-35 सिक्ख रेजिमेन्ट की जाट कम्पनी को आगरा जाना था।

उस कम्पनी में 375 सैनिक तथा अधिकारी व्यक्ति थे। श्री जगदेव सिंह को उन सब के नाम तथा पद स्मरण थे, क्योंकि आपको उन सभी से काम पड़ता था। जब पलटन आगरा पहुँची तो नाम सूची रेल के डिब्बे में ही छूट गई। अधिकारियों ने सोचा कि जब पेशावर से चले थे तब यह सूची वहीं छूट गई होगी, अतः वहाँ से दूसरी सूची मँगाने पर विचार हुआ। तभी जगदेवसिंह ने कम्पनी कमान्डर से कहा कि मैं वह सूची 3 घन्टे में बना दूंगा। कम्पनी कमान्डर के कहने पर आपने वह सूची पुलिस को भेजी तथा एक इन्स्पेक्टर उस कॉपी को लेकर सेना के कार्यालय में दे गया। जब दोनों सुधियों का मिलान किया गया तो दोनों सूची अक्षरशः समान थीं। कर्नल साहब ने प्रसन्न हो आपको क्वाटर मास्टर का हेडक्लर्क नियुक्त कर दिया। पन्द्रह दिन के बाद भी आपको लान्सनायक बना दिया तथा आपका वेतन तथा भत्ता भी बढ़ा दिया गया। | मांस भक्षण का विरोध- जब श्री जगदेव डोरा कैम्प (अरब) में युद्ध के मोर्चे पर थे, तब आदेश निकला कि सभी जवानों को मांस खिलाया जाये। भारतीय अधिकारी अंग्रेज अधिकारियों से दयते थे, उन्होंने सैनिकों पर मांस खाने के लिये दवाव देना शुरू किया। श्री जगदेवसिंह के नेतृत्व में आर्यसमाजी जवानों ने मांस भक्षण का विरोध प्रारम्भ किया। तब सभी आर्यसमाजी सैनिकों को बन्दी बनाकर एक अंग्रेज ब्रिगेडियर के आधीन कोर्टमार्शल बिठाया गया। तब ब्रिगेडियर ने सैनिकों से कहा कि बाइबिल को चूमकर शपथ लो। तत्र श्री जगदेव ने कहा- यह तो ईसाइयों की पुस्तक है, मैं इसे नहीं चूम सकता। हमारी धर्म पुस्तक वेद है। वहाँ वेद उपलब्ध नहीं था। तब विवश हो ब्रिगेडियर ने कहा कि शपथ लो मैं जो कुछ कहूँगा सच ही कहूँगा। तब श्री जगदेव ने वैसा ही कहा तथा कहा कि मांस खाना हमारे धर्म के विपरित है, अतः हम मांस नहीं खायेंगे। इसके अतिरिक्त आपने ब्रिगेडियर को ब्रिटिश एक्ट की कॉपी निकालकर दिखाई, जिसमें लिखा हुआ था कि किसी भी धर्म में हस्तक्षेप तथा जबरदस्ती नहीं की जायेगी।" तब उस अंग्रेज ने तुरन्त कोर्टमार्शल वापिस ले लिया तथा आदेश दिया कि किसी को भी मांस खाने को विवश न किया जाय।

सत्यार्थप्रकाश से प्रेम- श्री जगदेवसिंह का फिर आगरा कैम्प में भेज दिया गया। वहाँ आर्यसमाजी सैनिकों ने लकड़ी का आर्यसमाज मन्दिर बनाया। वहाँ भी आप प्रतिदिन हवन करते तथा सत्यार्थप्रकाश सुनाया करते। आप जब भारत से डोरा कैम्प गये तब सत्यार्थप्रकाश साथ लेकर गये थे। एक बार बुद्धू लोगों ने मार्ग में रजिमेन्ट का राशन लूट लिया तथा कुछ दिन ऑपरेशन स्केल पर राशन मिला, तब आपने राशन का कुछ हिस्सा छोड़ दिया, किन्तु सत्यार्थप्रकाश को साथ रखा। कुछ लोगों ने अफसरों से आपके सत्यार्थप्रकाश रखने की शिकायत की, तब आपने कहा कि सत्यार्थप्रकाश तो सरकार से रजिस्टर्ड हैं। इस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है, तब तो बहुत से लोगों ने भारत से सत्यार्थप्रकाश मंगाये।

कम्पनी में वैदिक धर्म की जय आपकी कम्पनी अरब से बम्बई बन्दरगाह पर पहुँची। वहाँ से आगरा छावनी स्टेशन पर पहुँची। रेजिमेन्ट में पाँच कम्पनियाँ थीं। पाँचों को आदेश हुआ कि आगे आगे कम्पनी हैं इक्वाटर मास्टर मार्च करेंगे। श्री जगदेवसिंह अपनी कम्पनी में आगे चल रहे थे। सभी कम्पनियों के आर्यसमाजियों ने निश्चय किया कि सभी बाजार में से आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म की जय बोलते हुए चलें। तब सभी कम्पनियों के जवान बाजार में उपरोक्त नारे लगाते हुए चल रहे थे। यह दृश्य जनता की भीड़ आश्चर्य से देख रहीं। भी। एक हथियारबन्द सेना का ऐसा प्रदर्शन अंग्रेज शासन के उस युग में साधारण बात न थी। यह इतिहास की अभूतपूर्व घटना थी। यह घटना प्रथम विश्वयुद्ध के अन्त की है। युद्ध समाप्ति पर इस रेजिमेन्ट को तोड़ दिया गया। तब कर्नल हिर्डी ने आप से कहा-मैं तुम्हें सिविल में अच्छी-सी नौकरी दिलवा दूंगा। किन्तु आपने आगे नौकरी न करने का निश्चय किया। तब आप गुरुकुल तथा आर्यसमाज के उत्सवों पर जाने लगे तथा गुरुकुलों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने लगे, जिससे कि संस्कृत भाषा का अध्ययन किया जा सके।

संस्कृत भाषा का अध्ययन- आप 1922 में गुरुकुल मटिण्डू के उत्सव पर गये तथा वहाँ दो महीने निःशुल्क सेवा की। तत्पश्चात् आप संस्कृत सीखने के लिये 20 रुपये मासिक पर वहाँ अध्यापन कार्य करने लगे। आप पं० शान्तिस्वरूप से संस्कृत सीखने लगे। आप एक वर्ष के अन्दर पंजाब विश्वविद्यालय की प्राज्ञ परीक्षा में 520/630 अंक प्राप्त करके उत्तीर्ण हुए। आपने विश्वविद्यालय के पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिये। अगले वर्ष विशारद परीक्षा में 458/600 अंक प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

सिद्धान्ती उपनाम- आपने दो वर्ष लगाकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक विद्यालय से सिद्धान्तभूषण तथा सिद्धान्त विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की। लाहौर से ही अपने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को अपना गुरु बनाया। यहीं से आपने सिद्धान्ती उपनाम धारण किया।

मटिण्डू गुरुकुल की सेवा प्रारम्भ में आप गुरुकुल मटिण्डू दो महीने के लिये गये थे, किन्तु सभी कार्यों में दक्षता के कारण चौ० पीरूसिंह ने आपको वहीं रख लिया। चौ० पीरूसिंह का स्वर्गवास होने पर आपने बड़ी दक्षता से गुरुकुल का संचालन किया। आप 1922 से 1929 तक गुरुकुल मटिण्डू में सेवा के बाद संस्कृत महाविद्यालय किरठल (मेरठ) चले गये।

जेलदार का घर- जिन दिनों आप गुरुकुल मटिण्डू में सेवा करते थे, उस समय एक दिन आप सिलाना (सोनीपत ) में प्रचार के लिये गये। गाँव में जेलदार चौ० अमरसिंह आर्यसमाजी थे, किन्तु उनकी पत्नी उपदेशकों के साथ बड़ा रूखा व्यवहार करती थी। भोजन की पूछने पर सिद्धान्ती जी ने हाँ कर दी। तब जेलदार से पत्नी की दुष्टता की बात बताई। इस पर सिद्धान्ती जी बोले\*\*जेलदार साहिब यदि आप नाराज न हो तो मैं आपके घर के इस रोग का इलाज कर देता हूँ। चौ० अमरसिंह ने स्वीकृति दे दी। जब भोजन का समय आया तब जेलदार की पत्नी ने सूखी रोटी तथा प्याज, पीतल की थाली में सिद्धान्ती जी के सामने रख दिये। तब सिद्धान्तौ जी ने वह धाली फेक मारी तथा बोले- 'जेलदार साहब के घर में यह भोजन? मैं आर्यसमाज का उपदेशक हूँ, मैं गाँव-गाँव जाकर प्रचार करूँगा कि जेलदार के घर में खाने को कुछ भी नहीं है। यह कहकर सिद्धान्ती जी उठकर चले पड़े। तब जेलदार साहब की पत्नी ने भागकर दोनों हाथ दरवाजे पर लगाकर रास्ता रोक लिया तथा क्षमा माँगी। तब जेलदारनी ने छत पर चौबारे में खाट पर सुन्दर दरी बिछाई तथा कहा मैं अभी खाना लेकर आती हूँ। तब वह सिद्धान्ती जी के लिये घी, बूरा तथा गेहूँ की रोटी लेकर आई। इसके बाद जेलदारनी का व्यवहार सदा के लिये ठीक हो गया।"

पुत्र वियोग- आप सेना से 1922 में वापिस आए थे। 1926 ई० में आपके घर पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। जिसका नाम महेन्द्र रखा गया, किन्तु डेढ़ वर्ष की अवस्था में ही वह चल बसा। इस घटना से सिद्धान्ती जी को बड़ा धक्का लगा तथा वैराग्य उत्पन्न हो गया। पत्नी त्याग- पुत्र वियोग के बाद आपने पत्नी से सलाह करके घर ही त्याग दिया।

आर्य महाविद्यालय किरठल ( मेरठ) गमन- जब आप मटिण्डू में पढ़ाते थे, उस समय आपके साथ श्री रिसालसिंह (किरलय) के भी पढ़ाते थे। उनके भाई किरठल महाविद्यालय के मन्त्री थे। मन्त्री जी ने अपने भाई रिसालसिंह के द्वारा सिद्धान्ती जी को किरठल पधारने का निमन्त्रण भेजा। अब आप ने 1929 ई० में किरठल गुरुकुल को संभाला। उस समय किरठल गुरुकुल की हालत कमजोर थी। आपकी पासबुक में 200 रुपये थे। आपने प्रारम्भ में उन्हीं रुपयों से काम चलाया। पढ़ाने तथा प्रबन्ध आदि भी सभी जिम्मेदारी आप की ही थी। आपने गुरुकुल के भवन पक्के बनवाए। विद्वान् अध्यापक बुलवाए, जिससे उस संस्थासे ओं रघुवीरसिंह शास्त्री जैसे विद्वान् तथा धाराप्रवाह संस्कृतवक्ता उत्पन्न हुए। शास्त्री जी लोकसभा के सदस्य भी बने थे।

विषपान- किरठल में रहते हुए षड्यन्त्रकारों लोगों ने आपको साँखिया जहर पिला दिया, किन्तु साँखिया बारीक पिसा न होने के कारण तथा अच्छे वैद्य की चिकित्सा के कारण आपके प्राण बच गये, किन्तु अधिक गर्म होने के कारण आपको बवासीर हो गया।

सीकर ( शेखावटी) प्रजापति यज्ञ राजस्थान के जयपुर राज्य के अधीन सीकर, जिले के अन्तर्गत शेखावाटी इलाका है। इसका शासक राजराजा कल्याणसिंह था। इस इलाके में जाटों को अछूत माना जाता था। जाटों को पानी बांस की नली के द्वारा पिलाया जाता था। यहाँ के जाट पिछड़े हुए थे। यहाँ जाटों के 500 गाँव थे। इन गाँवों में कोई प्राइमरी स्कूल न था। रजवाड़ों का शासन ही इन गावों में पिछड़ेपन का कारण था। स्त्रियाँ सोने के जेवर नहीं पहन सकती थी। दुल्हा घोड़ी पर नहीं चढ़ सकता था। जाटों के घर लड़का होने पर ठाकुर को एक रुपया टैक्स देना पड़ता था तथा ठाकुर के घर लड़का पैदा होने पर भी जाटों को ही एक रुपया टैक्स देना पड़ता था। सब पशुओं पर भी टैक्स देना पड़ता था। यदि कोई जुबान खोलने की हिम्मत करता तो राजा के गुण्डे उसे पीटते तथा लूट लेते थे।

उत्तरप्रदेश तथा हरियाणा में तो जाटों में जागृति आ चुकी थी, अतः जाट महासभा ने उत्तरप्रदेश तथा हरियाणा से कार्यकत्ता सौकर भेजे। वैसे तो सीकर रियासत में कोई जलसा नहीं हो सकता था, किन्तु यज्ञ धार्मिक कार्य होने के कारण यज्ञ की स्वीकृति मिल गई। सब गाँवों से, प्रत्येक घर से आटा तथा घी इकट्ठा किया गया। श्री हुकम सिंह रईस (मथुरा) को इस यज्ञ का यज्ञपति बनाया गया। आप सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं में प्रधान रह चुके थे। यज्ञ के संयोजकों ने श्री सिद्धान्त जी के पास यज्ञ करवाने का निमन्त्रण भेजा। सिद्धान्ती जी ने वीस ब्रह्मचारी यज्ञ करवाने के लिये भेजे। ब्रह्मचारियों को स्टेशन पर स्वागत करने गाँधी जी के साथी श्री जमनालाल बजाज स्वयं उपस्थित हुए। हजारों की भीड़ने ब्रह्मचारियों का स्वागत किया। ब्रह्मचारियों से कह दिया गया था कि यदि कोई पूछे तो बताना कि बनारस से पंडित आए हैं। यज्ञ मण्डप बड़ा विशाल बनाया गया था। इसके दो दरवाजे थे। एक पर पं० शान्तिस्वरूप। त्वयं तथा दूसरे दरवाजे पर पं० रघुवीरसिंह शास्त्री उपस्थित रहते थे। दोनों व्यक्ति केवल संस्कृत में ही बोलते थे। सभी जगह शोर मच गया कि एक 15 वर्ष का लड़का (रघुवीरसिंह शास्त्री) केवल संस्कृत में बोलता है। इस बात की वहाँ के पंडितों पर बड़ धाक जमी तथा उनका अभिमान चूर हो गया तथा वहाँ आकर नम्रता से बात करने लगे। इस यज्ञ में चौ छोटराम आदि बड़े बड़े नेता पधारे थे। इस यज्ञ का बहुत अच्छा प्रभाव हुआ तथा वहाँ आर्यसमाज का प्रचार बढ़ा तथा लोगों में जागृति आई।

हैदराबाद सत्याग्रह- हैदराबाद के अत्याचारी निजाम ने हिन्दुओं पर बड़े अत्याचार किये तथा उनके पूजापाठ, हवन-प्रचार, शादी में फ़ करवाने आदि पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। उसके विरोध में आर्यसमाज ने 1939 में सत्याग्रह किया था। सह सत्याग्रह कई महीनों तक चला। सत्याग्रहियों को पीटना तथा सीमेन्ट मिला खाना देना साधारण बात थी। इसमें दर्जनों आर्यवीर शहीद हुए। श्री सिद्धान्तों जी ने भी एक बड़े जत्थे के साथ तुलजापुर के कठिन मोर्चे पर सत्याग्रह किया। सिद्धान्ती जी को 15 लाठियाँ मारी गई थी। आपको छः महीने की कठिन जेल हुई। अन्त में निजाम को शुकना पड़ा। सत्याग्रह से आकर सिद्धान्ती जी भयंकर रुग्ण हा गये तथा बड़ी कठिनाई से उनकी जान बची।

भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग- आपने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया। 1945 में आप किरठल छोड़कर दिल्ली आ गए।

सम्राट पत्र ( साप्ताहिक)- दिल्ली में पहाड़ी धीरज में आपको रईस उमरावसिंह को धर्मशाला मिल गई। यहाँ से सम्राट नाम का पत्र निकाला गया। इस पत्र में बड़े अच्छे लेख तथा समाचार होते थे। 1948 में आपने जैसे-तैसे पैसे जुटाकर सम्राट प्रेस लगाया। इस प्रेस में आपके शिष्य श्री रघुवीरसिंह शास्त्री तथा श्री नारायण भी सम्मिलित थे।

1947 के उपद्रव- पहाड़ी धीरज के पास के इलाके मुस्लिम बहुल है। वहाँ के हिन्दुओं को सदा ही मुसलमानों के आक्रमण का भय रहता था। वहाँ सिद्धान्ती जी के जानकार डी.सी. श्री रंधावा थे। आपने उनसे मिलकर बन्दूक का लाइसेन्स प्राप्त किया। 1947 के दंगों में इसी बन्दूक से सिद्धान्ती जी छत पर बैठकर हिन्दुओं की रक्षा करते तथा हिन्दुओं की हिम्मत बंधाते रहे।

गुरुकुल झज्जर का पुनरुद्धार- पुराने कार्यकर्ताओं के देहान्त के बाद गुरुकुल झज्जर की स्थिति दयनीय हो गई थी। तब 1942 में श्री सिद्धान्ती जी चौ० छोटूराम (खरहर) नरेला से ब्रह्मचारी भगवान्देव (स्वामी ओमानन्द) जी को झज्जर लाए तथा आचार्य जी के अथक प्रयत्न से गुरुकुल झज्जर का पुनरुद्धार हुआ। सर्वखाप पंचायत के प्रधान- 1950 में सोरों (मुजफ्फरनगर) में सर्वखाप पंचायत बुलाई गई। जिसमें 50 हजार लोग उपस्थित हुए। इस पंचायत का आपको सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया। इस पंचायत ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध निर्णय लिये तथा बड़े-बड़े सुधार किये ।।

आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रवेश- स्वामी आत्मानन्द जी की विशेष प्रेरणा से आपने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में प्रवेश किया तथा सभा के मन्त्री तथा प्रधान भी रहे।

पंजाब का हिन्दी रक्षा सत्याग्रह-पंजाब के मुख्यमन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरो ने हरियाणा पर जबरदस्ती पंजाबी लाद दी थी, उसके विरोध में आर्यसमाज ने 1957 में आन्दोलन चलाया। यह आन्दोलन भई से दिसम्बर तक चला। पहले तो सिद्धान्ती जी भूमिगत रहकर कार्य करते रहे तथा बाद में उन्होंने दिल्ली के गाँधी ग्राउण्ड में गिरफ्तारी की घोषणा की तथा भरी सभा में पुलिस के पहरे के रहते प्रकट हुए तथा भाषण एवं गिरफ्तारी दी तथा बोस्टन जेल (हिसार) में आन्दोलन समाप्ति तक जेल में ही रहे।

हरयाणा लोक समिति - हिन्दी आन्दोलन में प्रसिद्ध आर्य राजनेता प्रो० शेरसिंह ने कांग्रेस छोड़कर सत्याग्रह किया था, अतः 1962 के चुनाव में प्रो० साहब ने हरयाणा लोक समिति नामक पार्टी बनाई तथा चुनाव लड़ कांग्रेस के विरुद्ध बहुत सी सीटों पर विजयी रहे। आपके प्रतिद्वन्द्वी श्री प्रतापसिंह दौलता ने आपके विरुद्ध आरोप लगाते हुए जिला न्यायालय में मुकदमा डाल दिया। मुकदमे में निचली अदालत ने आपको ही विजयी घोषित कर दिया, किन्तु प्रतापसिंह उच्च न्यायालय में चला गया तथा उच्च न्यायालय से सिद्धान्ती जी के विरुद्ध निर्णय दिया। तब सिद्धान्तो जो सर्वोच्च न्यायालय में चले गये। सर्वोच्च न्यायालय में आचार्य भगवानुदेव (स्वामी ओमानन्द) की गवाही हुई, आचार्य जी अपनी जीप पर सदा ओम् का झण्डा ही लगाते थे। अतापसिंह का आरोप था कि सिद्धान्ती जी ने ओम् के झण्डे का दुरुपयोग कर लोगों की धार्मिक भावना भड़काकर विजय प्राप्त की है। आचार्य भगवानुदेव जी ने कहा कि ओम् का झण्डा लगाने का मनुष्य मात्र को अधिकार है तथा मैं ओम् का झण्डा ही गाड़ी पर लगाता हूँ, अभी भी मेरी गाड़ी पर सामने ओम् का झण्डा लगा हुआ है। इस पर सर्वोच्च न्यायालय ने सिद्धान्ती जी को विजयी घोषित किया । स्मरण रहे कि इस चुनाव में रात को सिद्धान्ती जी तथा प्रो० शेरसिंह जी की गाड़ी गुरुकुल झज्जर में खड़ी होती थी। सवेरे प्रचार का सामान लेकर जाती थी। इन दिनों लेखक गुरुकुल झज्जर में ही व्याकरणाचार्य कक्षा में पढ़ता था।

हरयाणा का निर्माण- हरयाणा के पृथक् निर्माण में भी आपका, स्वामी ओमानन्द जी, ओ० शेरसिंह जी तथा चौ० देवीलाल जी का बड़ा सहयोग रहा। तच्च्या चण्डीगढ़ आन्दोलन में भी आप अग्रसर रहे। स्वर्गवास-27 अगस्त 1979 को दोपहर बाद एक बजे आपका स्वर्गवास हुआ। दिल्ली के निगमबोध घाट पर हजारों आर्यों की उपस्थिति में वैदिकरीति से आपका अन्तिम संस्कार किया गया।

श्रद्धाञ्जलि सभा-१ सितम्बर 1979 को आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं की एक बैठक दयानन्द मठ रोहतक में हुई, जिसमें सिद्धान्ती जी को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। यह सभा स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में हुई, जिसमें आपका स्मारक बनाने का निर्णय हुआ। इस भव्य भवन का नाम सिद्धान्ती भवन रखा गया। ऐसे निडर वीर, कर्मठ, सच्चे, विद्वान् पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी को शतशः नमन ॥

### दूसरी आर्यवेदप्रचार यात्रा सफलतापूर्वक सम्पन्न

सब सज्जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हरयाणा में प्रति जिला आयोजित की जाने वाली वेद प्रचार यात्रा द्वितीय चरण ईश कृपा और स्थानीय सज्जनों के सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गई। यह यात्रा वेदप्रचार समिति जिला चरखी दादरी की ओर से की गई थी। इससे पहली यात्रा झज्जर जिले के ग्रामों में हुई थी।

चरखीदादरी वेदप्रचार समिति की ओर से गुरुकुल झज्जर के आचार्य श्री विजयपाल योगार्थी के नेतृत्व में की गई, जिसका विवरण इस प्रकार है- 27 अगस्त 2018, मन्दौली, बलकारा, मन्दौला 28 अगस्त 2018, स्कूल आदमपुर डाढी, कलाली, छिल्लर 29 अगस्त 2018, दुधवा, चिड्या, दातौली 30 अगस्त 2018, नौसायां, चांगरोड़, नथू की ढाणी 31 अगस्त 2018, रुदौल, दगड़ौली, गोकल 1 सितम्बर 2018, झोझूकलां, बलाली, रामलवास ३ सितम्बर 2018, स्कूल कलियाणा, महडा, बादल 4 सितम्बर 2018, स्कूल काकड़ौली सरदारा, गोपी, पंचगांव 5 सितम्बर 2018, बूरा खेड़ी, पांडवाण, मानकावास 6 सितम्बर 2018, स्कूल बाढड़ा, भांडवा, आर्यनगर 7 सितम्बर 2018, कारी धारणी, कारीदास, हंसावास खुर्द 8 सितम्बर 2018, इमलोटा, बिगोवा, खातीवास 9 सितम्बर 2018, लाड, बारवास, जेवली ॥

इस प्रचार यात्रा में आचार्य विजयपाल जी, डॉ० राजपाल बरहाणा, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, सत्यवीर जी शास्त्री पूर्व सभा मन्त्री, प्रो० ओमकुमार जी जींद, डॉ. राजकुमार जी झज्जर आदि अनेक विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशक तेजवीर, श्री सन्दीप आर्य और आजाद सिंह छिल्लर ने समाज का मार्गदर्शन किया।

इस कार्यक्रम में आचार्य विजयपाल ने सभी श्रोताओं को यज्ञोपवीत देकर उसका महत्व समझाया तथा यज्ञ के उपरान्त सत्कर्म करने की प्रतिज्ञा कराई, पुनः भजनों और उपदेशकों के सारगर्भित व्याख्यानों के द्वारा श्रोताओं के ज्ञान में वृद्धि की गई। इस प्रकार तेरह दिनों में 3 ग्रामों में किया गया वह वेद प्रचार कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में कुछ उत्साही व्यक्तियों ने विशेष सहयोग दिया, जिनके नाम इस प्रकार हैं

सर्व श्री टेकराम जी मन्दीली, आजादसिंह जी छिल्लर, मनफूल सिंह शास्त्री, झोझू, रामकुमार जी झोनु, करतारसिंह जी, कंवलसिंह जी रुदड़ौल आचार्य ऋषिपाल जी, सत्यवीर शास्त्री बादल, ओम्प्रकाश जी पंचगांव, धर्मपाल शास्त्री धीर भाण्डवा, कुलदीप जी शास्त्री, महावीर शास्त्री आजाद, राजकुमार शास्त्री, लाड, विश्वमित्र शास्त्री भिवानी, सुरेन्द्र कुमार शास्त्री खातीवास, सन्तोष शास्त्री झज्जर, जगमाल वकील बेरला, महीपाल जी जेवलो, इत्यादि।

इनके अतिरिक्त जिन सज्जनों ने उपदेशकों के लिए भोजन छादन और विश्राम का प्रबन्ध किया, उन सभी को वेदप्रचार समिति दादरी की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

- निवेदक: धर्मपाल शास्त्री धीर 9992030394 मास्टर टेकराम आर्य 982685005

## गोमाता का वध बंद हो !

"गौ माता ही मेरी माता हैं, प्राचीन । ऋषि या हमारे राम, कृष्ण आदि महापुरुष यह क्यों मानते आये हैं। इसका मुख्य कारण कि उन्होंने अपनी ऋतंभरा प्रज्ञा और योग की दिव्य दृष्टि से यह प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया था कि मनुष्य जीवन के धर्म अर्थ, काम और मोक्ष चारों फलों को पूरा करनेवाली अथवा इनको प्राप्ति में पूर्ण रूप से माता के समान सहायक कोई प्राणी है तो गोमाता ही हैं।

जैसे माता प्रेम की मूर्ति हैं वैसे गाय भी प्रेम की मूर्ति हैं। एक जगह वेद में कहा है अन्योन्यभभिहर्षत वत्सं जातभिवाच्या हैं मनुष्यो ! तुम परस्पर ऐसा प्रेम करो जैसे सद्यः जात वत्स से गाय प्रेम करती है। इस में सत्य कितना कूट कूट कर भरा है। यदि सद्यः जाते। बछड़े पर कोई चीता या हिंस्र जानवर आक्रमण करे तो गाय उससे रक्षार्थ अपने प्राणों को बाजी लगाकर उसकी रक्षा करती है। गोमाता तो प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। मेरी आँखों देखी घटना हैं एक दिन एक कुत्ते ने एक मृगी के बच्चे का पीछा किया। ज्यो। ही वह कुत्ता उसे मारने के लिये पकड़ना चाहता था। कि मृगशावक नै करुण कन्दन किया। पास में चरती गुरुकुल की गायों ने उस दुखिया के शब्द सुने तो उस की रक्षार्थ दौड़ पड़ा। पास में जा सींगों से कुत्तों को मार कर भगा दिया और मृगशावक को रक्षा की। मृगशावक कुत्ते के पंजे से छूटते ही भाग पड़ा। कुत्ता भी पीछे दौड़ा साथ में गायें भी कुत्ते को सींगो से मारते भाग।

इसी प्रकार यदि गोपाल पर किसी प्रकारको आपत्ति आजाये तो गायें अपनी पूरी शक्ति लगाकर उसकी रक्षा करती हैं। गोमाता जननी और जन्मभूमि से भी बढ़कर है। अमेरिका देशवासी टेनेसी प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर श्री मालकम.आर.पेटसन लिखते हैं कि

'महाकवि होमरने युद्ध, चरजिल ने, आयुध, होरेस ने प्रेम, दान्ते ने नरक, मिल्टन ने स्वर्ग का गीत गाया। परन्तु मुझ में इन सब सिद्ध कवियों की समिलित प्रतिभा होती और मेरे हाथ में हजार तारों का तानपूरा होता तथा सारा संसार श्रोता बनकर सुनता तो मैं अपना हृदय खोलकर गौ का गीत गाता, उसके गुण बखानता और उसकी महिमा का गान यावचन्द्र-दिवाकर अमर कर देता।

यदि मैं मूर्तिकार होता और संगमरमर नामक पत्थर में टांकी से अपने विचार मूर्तिमान कर सकता तो संसार की पत्थर की सब खाने छानकर, विमलतम, शुभ्रतम संगमरमर की पटिया ढूँढ लाता और चन्द्रज्योत्स्ना से पुलकित निरश नील आकाश से मंडित किसी मनोहर वन में निर्मल जलके समीप पक्षियों के मधुर गुञ्जारव के बीच बैठकर अपने प्रेमधर्म के पवित्र कर्म में लग जाता। उस शीतल शभ्र संगमरमर का सारा खुदरापना अपनी छेनी से छील कर उसे इतना कोमल बना लेता कि उस में से मेरे मनकी गौकी मूर्त निकल आती। उस के विशाल करुणामय नेत्र होते, वह अपने उभरे स्तनों में भरा हुआ पुष्टिकर पेय पान कराने की प्रतीक्षा में खडी और प्रेम से अमृत के नेत्र वालों को सुख, आरोग्य एवं अलका आशीर्वाद देती हुई देख पड़ती।

गौ बिना ताज की महारानी है। उसका राज्य सारी समुद्रवसना धरती है। सेवा उसका विरद है और जो कुछ वह लेती है, उसे सौगुना करके देती है।

यदि आज संसार में गायें मर जायें तो कल ही मानव जाति पर महान् संकट आ पड़े। रेलकी सड़कें, बैंक, कपास की फसल, इन सब के बिना हम लोग मजे में अपना काम चला सकते हैं। पर गौ के बिना मानव जाति रोग, क्षय और अन्त में विनाश को प्राप्त होगी। गौ का हम वह सन्मान और स्तवन करें जिसके वह योग्य है। मुझे आशा है कि ज्यों ज्यों हमें ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे, क्रूरता और स्वार्थपरता छोड़ेंगे त्यों-त्यों उन गायों की हत्या करना और उनका मांस खाना भी त्याग देंगे जो हमें बल देती, सुख पहुंचाती और हमारे बच्चों के प्राण बचाती हैं।"

आज ऋषियों के देश भारत में जन्माता गोमाता का हमारे देखते हुए तिरस्कार ही नहीं अपितु निर्दयतापूर्वक वध किया जा रहा है। न जाने आज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य है या नहीं। वेद के कथनानुसारमाता रुद्राणां दुहिता वसुनां स्वसाऽऽदित्यानाम् । उनकी माता, दुहिता, स्वसा पर क्यों इतने अत्याचार हो रहे हैं? तथा वे इसको किस प्रकार सह रहे हैं।

मात्मा गांधी को अहिंसा का एकमात्र अवतार माननेवाले उनके शिष्यगण राजसत्ता पाकर कैसे अहिंसा को भूल बैठे हैं जबकि अंग्रेजों को भारत से निकालने के लिये सदैव यह युक्ति देते हुए प्रस्ताव पास करते रहे है कि अंग्रेज भारतीय संस्कृति की एकमात्र प्रतीक गौका वध करते हैं। इसलिये इनको भारत से निकाल देना चाहिये। जब कि स्वराज्य मिले कई वर्ष बीत चुके हैं किन्तु हमारे गांधीवादी राज्यसत्ताधारी गोवध बंद करने के लिये विचार तक करने को तैयार नहीं। वे ऋषियों को इस बात को भूल जाते है "गौ आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है" (महर्षि दयानंद)

इस गोरक्षा के आन्दोलन को अंग्रेजों के राज्य में स्वातन्त्रता युद्ध के सर्वप्रथम योद्धा दयानन्द ने निभकतापूर्वक आरंभ किया था। उसी कार्य को पूरा करने के लिये उनकी उत्तराधिकारिणी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाने अपने हाथ में लिया है। इसी गोवध आन्दोलन के फलस्वरूप श्री गाविंददासजीने गोवध बन्द कराने के लिये अपना विधेयक संसद में प्रस्तुत किया है। हमारी गांधीवादी सरकार के राज्याधिकारी श्री किदवई आदि यह स्वीकार करते हैं जब देश में जनता की भावना गोवध बंद करने के पक्ष में है तो प्रजातन्त्र में ऐसी भावना की उपेक्षा नहीं की जा सकती और इस दशा में सरकार को कदम उठानाही चाहिये किन्तु केन्द्रीय सरकार क्या कर सकती हैं इस पर हमने विचार किया है। वास्तव में वह अधिकार राज्यों को विधानसभाओंका है। यदि सेठ गोविन्ददास सौवधान में परिवर्तन करा दें तो केन्द्रीय सरकार भी वह काम कर सकती है" इस प्रकार शब्द कहकर टालते हुए प्रतीत होते हैं। परमात्मा इनको सद्बुद्धि प्रदान करे जिससे सर्वोपकारी गोमाता का वध शीघ्रही कानून बनाकर बन्द करदे। नहीं तो इन्हें आर्यसमाज के साथ जो स्वराज्यप्राप्ति के लिये बलिदान देने में कभी काँग्रेस से पीछे नहीं रहा, व्यर्थ टक्कर लेनी होगी। (ज्ञानगंगा क्रान्तिदूत हैदराबाद के अंक 1954 से साभार)

**लेखक-आचार्य श्री भगवान्देवजी (स्वामी ओमानन्द सरस्वती), गुरुकुल झजर**



# कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने दो भव्य समारोह में भावभीनी विदाई

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के । कुलपति, परोपकारिणी सभा अजमेर के कार्यकारी प्रधान, आर्यजगत् के ख्यातिप्राप्त विद्वान, वक्ता और मनुस्मृति के शोधकर्ता एवं भाष्यकार डॉ. सुरेन्द्र कुमार के संस्मरणों से जुड़ने का मुझे सहज रूप में अवसर प्राप्त हुआ, इसे मैं अपना अहोभाग्य समझता

महाविद्यालय गुरुकुल ज़बर (हरियाणा) को स्थापित हुए एक सौ वर्षों से अधिक का समय व्यतीत हो चुका है और वहाँ से सैकड़ों विद्वान् स्नातक निकल चुके हैं। डॉ० सुरेन्द्र कुमार पहले स्नातक हैं जिन्हें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार जैसे आर्य समाज के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय का कुलपति होने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यह न केवल गुरुकुल ज़बर के लिए अपितु परोपकारिणी सभा और सम्पूर्ण आर्यजगत् के लिए गर्व और गौरव को गात है।

यू.जी.सी. द्वारा प्रस्तावित सर्च कमेटी द्वारा डॉ० सुरेन्द्र कुमार का कुलपति के लिए चयन होने पर दिनांक 10 जुलाई 2013 को जब उन्होंने कार्यभार ग्रहण किया तो मुझे उनके साथ गुरुकुल विश्वविद्यालय में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। पांच वर्ष का सफलतम कार्यकाल पूर्ण होने पर 12 जुलाई । 2018 को जब कार्यभार त्याग किया तो भी मुझे उनके साथ होने का अवसर प्राप्त हुआ। दोनों ही अवसरों का मैं प्रत्यक्ष द्रष्टा रहा हूँ।

13 जुलाई 2018 को विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से उनके सम्मान में भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी एवं सेवानिवृत्त जन उपस्थित थे। सभी विभागों और यूनियन की ओर से उनका गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय रोह में भावभीनी विदाई स्वागत करने के लिए माल्यार्पण किया गया। कार्यवाहक कुलपति प्रो० डी.के. महेश्वरी और कुल सचिव प्रो० दिनेश भट्ट ने स्मृति चिन्ह एवं शाल ओढ़ाकर सम्मान किया।

अनेक शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी इस समारोह में अपनी भावनाएँ व्यक्त करना चाहते थे किन्तु समयाभाव के कारण वरिष्ठ संकाय अध्यक्षों को ही अपने विचार प्रकट करने सुअवसर मिला। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात थी कि इतने बड़े जनसमूह के बीच मुझे भी विचार प्रकट करने का सुअवसर मिला। कार्यवाहक कुलपति, कुलसचिव

और प्रोफेसर वक्ताओं ने डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी की उपलब्धियों के बारे में जो जानकारियाँ दो उन्हें सुनकर हमारा सिर गर्व से ऊँचा हो गया। वक्ताओं ने डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी के विषय में इस प्रकार बताया। उन्होंने कहा

1. हमें 30-35 वर्ष का समय यहाँ सेवाकार्य करते हुए हो चुका है। यह हम पहला अवसर देख रहे हैं जब किसी कुलपति के सम्मान में विदाई समारोह आयोजित हो रहा है और वह भी भव्य स्तर पर। नहीं तो सब विवादास्पद रूप में बिना समारोह के विदा हुए हैं।

2. सन् 2006 से यह विश्वविद्यालय संकट से गुजर रहा था। चवालीस विश्वविद्यालयों के साथ इनको भी भंग करने का नोटिस केन्द्र सरकार के शिक्षा मन्त्रालय से प्राप्त हो गया था। सन् 2009 में टंडन कमेटी ने इस विश्वविद्यालय को 'सी' ग्रेड विश्वविद्यालयों की सूची में डाल दिया और इसकी सभी सुविधाएँ समाप्त कर दी। डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी के कार्यकाल में इनके नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट से विश्वविद्यालय के पक्ष में केस में विजयी रहे और विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन के पक्ष में केस में विजयी रहे और विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन करने वाली राष्ट्रीय संस्था नाक (NAAK) द्वारा 2015 में इसे 'ए' ग्रेड प्राप्त हुआ है। गुरुकुल विश्वविद्यालय के इतिहास में यह पहला अवसर था जब इसे 'ए' ग्रेड मिला है। उसके पश्चात् निरीक्षण के लिए यू.जी.सी. की ओर से एक 14 सदस्यीय कमेटी

आई जिसने विश्वविद्यालय के पक्ष में रिपोर्ट दी जिसमें टंडन कमेटी द्वारा प्रदत्त 'सी' ग्रेड को निरस्त कर अनुदान आदि की सुविधायें पुनः प्रारम्भ करने को सिफारिश की है।

3. यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। कि डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी ने बिना किसी भेदभाव के शिक्षकों और कर्मचारियों के साथ शिष्ट व्यवहार किया तथा विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली को व्यवस्थित और नियमानुसार बनाया। उन्होंने विपरीत परिस्थितियाँ होते हुए भी संस्था के हित में निर्णय लिये, कभी संस्था का अहित नहीं होने दिया।

4. जब डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी ने कार्यभार संभाला पाँच छः वर्षों से शिक्षकों, कर्मचारियों के प्रोन्नति के केस अनिर्णीत पड़े थे, उन सब को बिना किसी पक्षपात के पदोन्नत किया। सेवनिवृत्त होते समय सभी शिक्षकों, कर्मचारियों की यथालमय पदोन्नति हो चुकी है।

5. पाँच छः वर्षों से विश्वविद्यालय का आडिट नहीं हुआ था उस आडिट प्रक्रिया को नियमित कराया गया। अब प्रतिवर्ष नियमित रूप से आडिट होता है।

6. इसी प्रकार सन 2006 को पेन्शन फिक्सेशन लम्बित चल रही थी। आज एक भी अधिकारी / कर्मचारी की पेन्शन लम्बित नहीं है। वर्षों से रिक्त पड़े पदों को भरने की प्रक्रिया भी डॉ० साहब ने पारदर्शी तरीके से सम्पन्न की।

7. अपवाद अवसरों को छोड़कर डॉ० साहब ने अपने पांच वर्ष के कार्यकाल में अधिकांशतः अपनी यात्रा भत्ता नहीं लिया। एक भी हवाई यात्रा, बस यात्रा और रेल यात्रा का व्यय विश्वविद्यालय से ग्रहण नहीं किया। एक बार भी डॉ० साहब निर्धारित पांच हजार दैनिक व्यय के होटल में नहीं रुके। त्यागभाव से उन्होंने कार्य करके पूरी ईमानदारी का उदाहरण प्रस्तुत किया वे ऐसे कुलपति थे जिन्होंने। अन्य कर्मचारियों की तरह कार्यालय में अधिकतम समय प्रदान किया है। मैं उपरोक्त विचारों को वक्ताओं से सुन रहा था और भाव विभोर होकर आनन्द का अनुभव कर रहा था। मुझे लग रहा था कि डॉ० साहब ने यजुर्वेद के 40 वें अध्याय के पहले मन्त्र के मन्त्रांश तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः" को अपने इस पाँच वर्ष के कार्यकाल में चरितार्थ किया।

निष्कर्षरूप में कहा जा सकता है कि डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी का यह पांच वर्ष का कार्यकाल विश्वविद्यालय के इतिहास में उल्लेखनीय रहा है और विश्वविद्यालय विगत संकटों से मुक्त होकर उन्नति की ओर अग्रसर हुआ है। यही कारण था कि विश्वविद्यालया के सभी लोगों ने मिलकर भावभीनी विदाई दी। विश्वविद्यालय की ओर से तथा व्यक्तिगत रूप से शिक्षकों और कर्मचारियों के प्रतिनिधि के रूप में प्रो० देवेन्द्र मलिक, डॉ० अजय मलिक, श्री संचित डागर, श्री राजीव त्यागी उन्हें उनके निवास स्थान गुरुग्राम तक विदा करने के लिए साथ आये। इस सफलतम कार्यकाल के लिए डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी को हार्दिक बधाई और प्रभु से कामना कि उनका शेष जीवन आर्य जगत् की सेवा में व्यतीत हो।

कन्हैयालाल आर्य वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा,

पुस्तकाध्यक्ष परोपकारिणी सभा अजमेर, उपाधान,

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

## एक और प्रमाण

महरौली (मिहिरावली) में स्थित सूर्यमन्दिर (कुतुबमीनार) का निर्माता मिहिरदेव था, इस विषय में गुप्तसम्राट् महाराज समुद्रगुप्त ने स्वरचित कृष्णचरितम् में लिखा हैकाव्यं चकार रमणीयगुणं यशस्यम्, सूर्यस्तवं शिखरिणीशतमाप्रमाणम्। अत्र स्थितोऽलभत भूरि यशो बभूव, भक्तः सहस्रकिरणस्य तमोपहन्तुः ॥ 31॥ जातो महात्मनां मान्यो पशुवंशभवोऽपि सन्। चक्रे मिहिरदेवः स रम्यं चादित्यमन्दिरम् ॥ 32॥ । पशु पारस देशवासी मिहिरदेव ने सूर्यभगवान् की स्तुति में शिखरिणी छन्द से युक्त सौ भोकों का एक काव्य बनाया था। उसी काव्य को विद्वत्ता से यह कवि भारत में भी प्रसिद्ध हो गया। यही नहीं, किन्तु इस सूर्यभक्त मिहिरदेव ने सूर्यमन्दिर के निर्माण में भी अद्भुत कौशल का प्रदर्शन किया है। विशेषवक्तव्य। इस कृष्णचरित के लेखक वही गुप्तवंशीय महाराज समुद्रगुप्त हैं, जिनको विजयों को प्रशस्ति उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र सम्राट् चन्द्रगुप्त ने महरौली में स्थित लौहस्तम्भ पर उत्कीर्ण कराई थी। उसी स्तम्भ के पास सूर्यमन्दिर (कुतुबमीनार) स्थित है। इस सूर्यध्वज-सूर्यमन्दिर का निर्माण पारस देशवासी श्री मिहिरदेव ने कराया था। उन्हीं के नाम पर मिहिरावली=महरौली नामक नगर का निर्माण हुआ। मिहिर शब्द का अर्थ पारसी भाषा में सूर्य है। सूर्य से सम्बन्धित यह कुतुबमीनार है। इसमें सत्ताईस खिड़कियां हैं। जो सत्ताईस नक्षत्रों से सम्बन्धित हैं। इस सूर्यमन्दिर के चारों ओर सत्ताईस मन्दिर भी थे, जिन्हें कुतुबुद्दीन ऐबक ने तोड़कर उन्हीं के पत्थरों से कुव्वत उल मस्जिद बनाई और उसके मुखद्वार पर यह शिलालेख लिखवा दिया कि प्रत्येक मन्दिर बीस-बीस लाख रुपये से बना हुआ था।

श्री मिहिरदेव ने संस्कृत भाषा में एक ग्रन्थ लिखा था, जिसका नाम है- बाराहीसँहिता। इसमें पारसी भाषा के ज्योतिष सम्बन्धी अनेक शब्दों का प्रयोग मिलता है। जैसे- ताबुरि, जितुमलेय, पाथोन, जूक, आकोकेर, हेलि, हिबुक, आस्फुजित्, अनफा, सुनफा, आपोक्लिम, पणफर, मेपूरण, रिफः आदि। इन शब्दों का प्रयोग पुराकाल में यूनान में भी प्रचलित था। विदेश में उत्पन्न होकर भी मिहिर देव ने भारतीय ज्योतिष के ग्रन्थ लिखे तथा तदनुसार सूर्यमन्दिर का निर्माण करके भारतीय ज्योतिष को एक अद्भुत देन दी है। इसी का वर्णन गुप्तसम्राट् समुद्रगुप्त ने स्वरचित कृष्णचरितम् में किया है। इसी सम्राट् की भारत विजयों को लौहस्तम्भ पर चन्द्रगुप्त ने उत्कीर्ण कराया था, जिसे इतिहासकार भूल से चन्द्रगुप्त की विजय मानते हैं भला अपनी मृत्यु के पश्चात् अपनी विजयों का वर्णन कोई व्यक्ति कैसे कर सकता है। समुद्रगुप्त के द्वारा आदित्यमन्दिर का वर्णन करने से उसके पास ही उसकी विजयों का भी वर्णन लौहस्तम्भ पर किया गया है। इससे मिहिरदेव और समुद्रगुप्त दोनों ही मरणोपरान्त भी साथ-साथ ही देखें जो सकते हैं।

विरजानन्द दैवकरणि

## कागज के फूल

तिमिर निरीक्षक जीवन में क्या अंकन करे प्रकाश का,  
पतझड़ कभी न देखा वह क्या मूल्य करे मधुमास का ॥

1. क्या समझे जन्मान्ध मूक नर रूप बताना दर्पण का,  
मानी कभी न कर पाता मूल्याङ्कन आत्मसमर्पण का,  
है निष्फल मेंढक के आगे गुण गाना हरिचन्दन का,  
पुत्रवती क्या जाने कितना विरह सताता नन्दन का,  
नहीं महत्त्व समझ पाता है, संशयालु विश्वास का ॥ 1 ॥

2. सुखी न कर पाता मूल्याङ्कन दुःखियों के अरमानों का,  
कायर समझ सके क्या मूल्य शहीदों के बलिदानों का,  
शासक जान न सके घाव कितना गहरा अपमानों का,  
छुआ नहीं अभिशाप जिसे क्या बोध उसे वरदानों का,  
चींटी क्या जाने कितना विस्तार धरा आकाश का ॥ 2 ॥

३. हय में पलने वाला क्या जाने गुण संघर्षों का,  
निरुद्देश्य जीने वाला क्या करे मूल्य युग वर्षों का,  
भोगी को आस्वाद मिले क्या चारत्रिक आदर्शों का,  
उत्कर्षों में पले पुसे को भान नहीं, अपकर्षों का,  
आदर क्या कर सके कलेवर श्वास और विश्वास का ॥३॥

4. नभ का चांद अरे क्या जाने निशि में दीपक का जलना,  
शिखरी पर चढ़ने वाला क्या जाने निर्झर का ढलना,  
हरा-हरा चरने वाला क्या जाने सूखे से पलना,  
सरलमना क्या जाने दम्भी की अन्तर कलुषित छलना,  
भैंस कभी भी सुना न सकतौ स्वर मुरली के रास का ॥4॥

पतझड़ कभी न देखा...

1 प्यासा पनघट से

## कलियुग कालिमा ।

कलियुग ! तेरी गजब कहानी-कण-कण पर है लगी निशानी,

कलियुग ! तेरी गजब कहानी।।

चिन्ताओं को पार नहीं है क्षणभर सुख संचार नहीं है,  
अन्तर में जब घुसें किसी के, मिलता आंशिक प्यार नहीं है,  
मन से बन बैठे अभिमानी, कलियुग ! तेरी गजब कहानी।।1।।।  
बनी अहिंसा कायर लक्षण, झूठ दम्भ का मिलता शिक्षण,  
श्रद्धा देवी, विदा ले रही, तर्क बना जन-जन का भूषण,  
बढ़ी अनैतिकता शैतानी, कलियुग ! तेरी गजब कहानी।।2।।।  
धर्म अफीम बना हैं खारा, संयम त्याग समझते कारा,  
ऋण लेकर भी खाओ पीओ, पुण्य-पाप मन कल्पित धारा, ।  
नास्तिकता बढ़ रही दिवानी, कलियुग! तेरी गजब कहानी।।3।।।  
शिष्यों से डरते हैं गुरुवर, शासन करते पुत्र-पिता पर,  
सिद्ध उक्ति कर रही सास बहु, मिट्टी के चूल्हे हैं घर-घर,  
चाहते सब अपनी मनमानी, कलियुग ! तेरी गजब कहानी।।4।।।  
कहलाता है विनय गुलामी, रहा न कोई सेवक स्वामी,  
सदाचार की सीख वचारे, रावण जैसे लोभी कामी,  
दास बने पैसे के प्राणी, कलियुग ! तेरी गजब कहानी।।5।।।  
भले निरन्तर कुचले जाते, बगुले चतुर हंस कहलाते चरित्रहीन पति की घी में,  
पांचों ही अंगुलियां पाते, सत्ता की छाई मस्तानी, कलियुग !  
तेरी गजब कहानी।।6।। बिना झूठ के काम न चलता, धर्मी बैठा हाथ मसलता,  
दम्भी, ढोंगी, भ्रष्टाचारी, बिना परिश्रम फलता खिलता,  
जन-जन के अन्तर की वाणी, कलियुग !  
तेरी गजब कहानी।।7।।।  
1 प्यासा पनघट से

## हिन्दी मोहन

मेरा हिन्दी है तन मेरा / हिन्दी है मन मेरा।।  
हिन्दी हैं धन मेरा / हिन्दी में जीवन मेरा।।  
हिन्दी हिन्दी हिन्दी हिन्दी हिन्दी नन्दन मेरा।।  
हिन्दी मेरी भारत माता हिन्दी वन्दन मेरा।।  
इसमें सूर, कबीरा बसते हैं मीरा की वाणी।  
बोधा, आलम, कुतबन, मंझन हैं गंगा कल्याणी।  
हुलसी से तुलसी, तुलसी से हुलसी है गुड़धाणी।  
वरदाई, भूषण दुषण हित कलम बड़ी कटखाणी।  
जय हो जय हो जय हो जय हो हिन्दी पूजन मेरा।। हिन्दी है तन मेरा.....  
पद्मावत लिख गये जायसी उक्ति समासों वाली।।  
साका जौहर दर्पण खिलजी आस उजासों वाली।  
धूय रूप की अन्धकूप की खेल-तमाशों वाली।।  
नागमती पतझरी पद्मिनी रुत मधुमासों वाली।  
गोरा-बादल आल्हा-ऊदल है मनभावन मेरा।। हिन्दी है तन मेरा..  
हिन्दी अपनी हम हिन्दी के ऐसा भाव जगाएँ।  
हिन्दी नहीं सितम्बर को ही सारे साल चलाएँ।  
हिन्दी लिखें पढ़ें हिन्दी ही हिन्दी रोयें गायें।  
हिन्दी बोल-बोलकर दुनिया को जयहिन्द सिखायें।  
हिन्दी आत्ममुक्ति का साधन हिन्दी बन्धन मेरा। हिन्दी है तन मेरा.....  
हिन्दी के ही शब्दकोश से निकला अमर तिरंगा।।  
हिन्दी है तो कल-कल करतीं बहती यमुना-गंगा।  
गद्यपद्य की धाराओं पर चमके कंचनजंगा।।  
सबकी जिल्लाओं पर नाचे उच्छल जलधि तरंगा।  
जागोजागोजागोजागो हिन्दी मोहन मेरा।  
हिन्दी है तन मेरा.....  
हिन्दी वतन हवन है हिन्दी गन्ध-सुगन्ध हमारी।।  
चिन्तन मनन कथन लखन प्रवचन सुरभित फुलवारी।।  
भव्य भवन सौभाग्य सदन रक्षाबन्धन हितकारी।  
जटाजूट शिव के डमरू से निकली दिव्य सवारी ।।

हिन्दी अपना बचपन पचपन हिन्दी यौवन मेरा।। हिन्दी है तन मेरा..

हिन्दी नहीं मात्र भाषा भारत-चेतना बतायें।

हिन्दी हैं गोरस की मटकी योग-क्षेम छलकायें।

हिन्दी ऋषियों की परम्परा चन्दन सा महकायें ।

हिन्दी नहीं किसी से भी कम दुनिया को दिखलायें।

क्या कर लेगा 'कविर्मनीषी' छलिया नन्दन मेरा।।

हिन्दी है तन मेरा, हिन्दी हैं मन मेरा, हिन्दी है धन मेरा।

1 डॉ० सारस्वत मोहन' मनीषी'

मोबाइल- 9810835335, 8527835835

## आर्य दैनन्दिनी- 2019 (डायरी)

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नम्बर सहित प्रकाशित करता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व अपना पता भेजें, जिससे कि सही नम्बर प्रकाशित हो सके। कई विद्वानों के नम्बर बदल गये हैं, अतः आप सभी से निवेदन है कि आप सब अपना नया नम्बर और पता भेजें।

यह आप अगस्त 2018 तक भेजने की कृपा करें। ताकि उसे भली प्रकार आर्य दैनन्दिनी में प्रकाशित किया जा सके।

1 संजीव आर्य (प्रबन्धक ) आर्य प्रकाशन, 814 कुण्डेवालान अजमेरी गेट, दिल्ली-110006

मोबाइल-09868244958 Email-aryaprakashan@gmail.com

## गुरुकुल के समाचार

विरजानन्द दैवकरणि

1. 15 अगस्त 2018 को गुरुकुल झजर में आचार्य विजयपाल योगार्थी की अध्यक्षता में भारत की स्वतन्त्रता का 72 वा दिवस मनाया गया। आचार्य जी ने पहले ध्वजारोहण किया तदनन्तर ब्रह्मचारियों को उद्बोधन देते हुए कहा कि आज हमारा देश स्वतन्त्र है, परन्तु आप को ज्ञात होना चाहिये कि यह स्वतन्त्रता हजारों वीरों के बलिदान का परिणाम है। सन् 1857 के बाद अंग्रेजों ने भारत को पराधीनता की बेड़ी में बुरी तरह जकड़ दिया था। इस देश को स्वतन्त्र कराने के लिए अनेक वीर

फांसी के तख्ते पर झूल गये, सैंकों, क्रान्तिकारियों की हत्या कर दी गई, अनेक वीरों को जेलों में भयंकर यातनायें दी गई, स्वतन्त्रता की मांग करने वालों के ग्राम जला दिये, उन्हें हाथी के नीचे कोल्हू से पीस दिया गया, कितने हो वीरों को पंक्ति बद्ध करके पीठ की ओर से उन पर गोलियां चलाई, अमृतसर के जालियांवाला में डायर ने सैंकड़ों निरपराध लोगों को मार गिराया। इतना होने पर भी भारतीय वीर क्रान्तिकारी डरे नहीं, सहमे नहीं, परन्तु इटकर अत्याचार का सामना किया और देश को स्वतन्त्र कराया। आप ने इस कष्ट से प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा करना है।

यहां विद्या अध्ययन करते हुए गुरुकुल के नियमों का श्रद्धा से पालन करो। ऐसा कोई कार्य मत करो जिससे संरक्षक या अध्यापक आपको दण्ड दें। बिना पूछे किसी का कोई सामान प्रोम में मत लायें। इस कार्यक्रम के अनन्तर श्री रामसिंह आर्य योगशिक्षक और गुरुकुल के कुछ ब्रह्मचारियों ने भी कविता और भाषण के द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किये।

2. 26 अगस्त को गुरुकुल में यज्ञ के उपरान्त श्रावणी पर्व अति उत्साह के साथ मनाया गया। नये ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत प्रदान करके 41 पुराने ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार भी किया। इस कार्यक्रम में निम्नलिखित विद्वानों ने अपने उद्बोधन से श्रोताओं को ज्ञानवर्धन किया।

यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० जगदेव जी विद्यालंकार ने यज्ञोपवीत का महत्व बताते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति पर तीन ऋण होते हैं- ऋषिऋण, देवऋण, पितृऋण। अपने सदृश विद्वान् पैदा कर देने से ऋषि ऋण उतरता है। अग्नि, वायु, जल आदि जड़ देवों की शुद्धि करने के साथ-साथ गुरु आचार्य, अतिथि की सेवा करने से देव ऋण से मुक्ति मिलती है। पिता की सन्तति को आगे बढ़ाने से पितृ ऋण से अनृण हुआ जाता है। माता-पिता की सेवा भी इसी का अंग है। ऋषियों ने जीवन को उच्चतम स्तर पर ले जाने के लिए पर्यो का प्रचलन किया था। लम्बे जीवन में एकरसता से जो कब आ जाती है उसे दूर करने हेतु वर्ष में अनेक पर्व निर्धारित किये गये हैं, जैसे रस्से में गांठ लगाकर उनके सहारे ऊपर चढ़ने में सहायता मिलती है, इसी प्रकार लम्बे जीवन को सरलता से जीने के लिए पर्व का सहारा लेना चाहिये। पर्व जीवन के पड़ाव हैं, इन से एकरसता दूर होकर नई ऊर्जा, नई स्फूर्ति मिलती है। इस श्रावणी पर्व से वेदादि ग्रन्थों के स्वाध्याय करने का व्रत धारण किया जाता है।

डॉ० राजपाल ने कहा कि यह पर्व वेद के स्वाध्याय से सम्बद्ध है। वेद शब्द धातुपात को चार धातुओं से बना है, इसका मूल अर्थ है। ज्ञान का ग्रन्थ। इस ज्ञान से विचारपूर्वक कर्म करने से लाभ होता है। जिन्दावस्था, बाइबल, कुरान और गुरुग्रन्थ साहिब में वास्तविक ज्ञान न होकर व्यक्तिगत कथा कहानियां तथा अनेक सन्तों की सामान्य वाणियों का संग्रह मात्र है। इनके पठन से व्यक्ति जीवन के चरम उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता अतः वेद का स्वाध्याय करके तदनुसार जीवन में आचरण करना ही इस श्रावणी पर्व को मनाना सार्थक है।।

मंचसंचालक श्री राजवीर छिकारा ने भी गुरुकुलीय शिक्षा का महत्व बताते हुए छात्रों को तथा श्रोताओं को जीवन में सत्यता को ग्रहण करने पर बल दिया।

डॉ० सुरेन्द्र कुमार (रोहतक) ने वेदारम्भ संस्कार का महत्व बताते हुए कहा कि उपनिषद् में गुरु-शिष्य और विद्या का सम्बन्ध बताने के लिए गुरु को पूर्वरूप, शिष्य को उत्तर रूप, शिक्षा देने= प्रवचन करने को सन्धान तथा गुरु द्वारा। शिष्य को ज्ञान देने को सन्धिरूप बताया है। जब लोगों की रुचि वेदाध्ययन से हटने लगी तब ऋषियों ने वेदांग आदि की रचना की। वेद पढ़ने से पूर्व। शिक्षा-कल्प आदि वेदांग पढ़ने आवश्यक हैं।

कल्प का अर्थ है यज्ञ आदि क्रिया कलाप का वेद विद्या के बिना सुस्त नहीं मिलता क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त करना। वेद द्या के बिना सुख नहीं मिलता। वेद की रक्षा तथा मुस्लिमों से बहनों की रक्षार्थ रक्षाबन्धन का आरम्भ हुआ।

डॉ० राजकुमार आचार्य ने दान का महत्ता तथा शिक्षा का लाभ बताते हुए दानियों के द्वारा प्रदत्त दान की सूची सुनाई जिससे नये सजनों ने भी दान देकर पुण्य कमाया। श्री तेजवीर जी ने अपने मधुर भजनों से सभी श्रोताओं का मनोरंजन करते हुए सार्थक जीवन विषयक भजन सुनाया।

अन्त में आचार्य विजयपाल योगार्थी ने कहा ग्राम और नगरों में पाखण्ड दुबारा फैल रहा है इसे समाप्त करने के लिए आर्यपुरुषों को आगे आना चाहिये। आप यहां प्रायः करके अकेले आये हैं अपनी पत्नी और बच्चों को भी साथ लाना चाहिये,



जिससे पूरा परिवार आर्यसमाज की ओर आकर्षित हो । आर्यपरिवारों से भी आर्यसमाज सिकुड़ रहा है। प्रत्येक परिवार को प्रातः सायं मिलकर सन्ध्या-यज्ञ करना चाहिये, जिससे छोटे बच्चों पर भी संस्कार पड़े। अच्छे संस्कारों से युक्त सन्तान उत्पन्न करें तथा एक बालक को देश सेवा हेतु भी प्रदान करें। बच्चों की दिनचर्या पर भी ध्यान दें, जिससे यह पता रहे कि हमारा बच्चा कहीं गलत संगति में तो नहीं रह रहा।

अन्त में सभी विद्वानों और श्रोताओं का धन्यवाद करके शान्तिपाठ के साथ महाकार्यक्रम समाप्त हुआ। आगन्तुकों के लिए भोजन तैयार करने में महावीर शास्त्री ने तथा भोजन वितरण करने में आचार्य विजयपाल जी चौ० पूर्णसिंह देशवान और अशोक शास्त्री ने पूरा सहयोग दिया।

## डिजीटल सूधारक पत्रिक की प्रस्तुती मनोज पाण्डे

## दूसरी वेदप्रचार यात्रा के चित्र



गांव रामलवास



गांव चांगरोड



गांव दगडौली



गांव बलाली



गांव महड़ा



गांव गोकल



स्कूल कलियाणा



गांव झोझूकलां

## दूसरी वेदप्रचार यात्रा के चित्र



काकड़ौली सरदार शास्त्री स्कूल



गांव बादल में



गांव मानकावास



गांव रुदौल



गांव गोपी



गांव बूरा खेड़ी

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757  
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लीटाने का पता :-  
गुरुकुल झजर, जिला झजर (हरयाणा)-124103  
E-mail : gurukuljhajar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री \_\_\_\_\_  
स्थान \_\_\_\_\_  
डा० \_\_\_\_\_  
जिला \_\_\_\_\_

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झजर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ,  
गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।